# गोपी गवैया बाघा बजैया

–उपेंद्रकिशोर रायचौधरी

मूल बांग्ला से अनुवाद – **लाल्टू**

तुम गाना गा सकते हो? मैं एक आदमी की कहानी सुना रहा हूँ, वह एक गाना गा सकता था। उसका नाम था गोपी कंइया, उसके पिता का नाम था कानू कंइया। उसकी एक किराने की दूकान थी। चूँकि गोपी गाना गा सकता था, और उसके गाँव में और कोई कुछ नहीं गा सकता था, इसलिए सब उसकी खातिर करते और उसे गोपी "गवैया" कहकर पुकारते।

हालाँकि गोपी को एक से अधिक गीत नहीं आता था, पर वही एक गाना वह खूब गाता। उस एक गाने को गाए बिना उसे पल भर भी चैन न मिलता, उसका दम घुटने लगता। जब वह घर में बैठ कर गाता, उसके पिता की दूकान के सारे खरीदार दौड़ भागते। जब वह मैदान में गाता, वहाँ बँधी सारी गाएँ रस्सी तोड़कर भाग जातीं। आखिर उसके डर से उसके पिता की दूकान में खरीदारों ने आना छोड़ दिया, चरवाहे भी मैदानों में गायों को न ले जा पाते। तब एक दिन कानू कंइया ने एक बड़ा बाँस लेकर फटकारते हुए उसे दौड़ भगाया, तो वह दौड़कर मैदान में चला गया; वहाँ कई चरवाहों ने लाठियों से पीछा किया तो वह जंगल में घुस गया और वहाँ जाकर खूब चिल्लाकर गाया।

गोपी के गाँव के पास ही एक और गाँव में एक आदमी रहता था, उसका नाम था पाँचू पंइया। पाँचू के बेटे को ढोलक बजाने का शौक था। ढोलक बजाते–बजाते वह खूब झूमता रहता, सर हिलाता और आँखें तर्राता; दाँत निकालता और भौंहें चढ़ाता। उसके गाँव के लोग यह देखकर मुंह खोलकर खड़े रहते और कहते, "आहा ! आ....हा!! अ – अ –अ – अ– ह –ह–ह–ह !!!" अंत में जब वो 'हा:, हा:,....हा:, हा:.. !!' कहकर शेर जैसा गुर्रा उठता, तो लोग भागने की जगह न पाकर इधर–उधर धड़–धड़ाम गिर जाते। इस वजह से सब उसे 'बाघा बजैया' कहकर पुकारते। उसका यह बाघा नाम प्रसिद्ध हो चुका था; उसका असली नाम क्या था, किसी को मालूम नहीं था।

बाघा ढोल बजाता और हर रोज एक ढोलक तोड़ता। अंत में पाँचू के लिए उसके ढोल का खर्च निकाल पाना मुश्किल हो गया। पर बाघा का बजाना बंद हो जाए, यह कैसे हो सकता था? गाँव के लोगों ने पाँचू से कहा – 'तुम नहीं कर पाते तो कोई बात नहीं, हम सब चंदा इक्कठा कर ढोलक का खर्चा दे देंगे। गाँव में ऐसा एक उस्ताद हो और उसका बाजा बजाना बंद हो जाए!! ऐसा नहीं होगा।' आखिर सबने तय किया कि मिलकर चंदा इक्कट्ठा कर एक ढोल खरीदकर बाघा को दिया जाएगा, और वह ढोलक और उसकी छाल इतनी मजबूत बनी होगी कि बाघा के हाथों भी जल्दी न टूट पाए।

वह ग़ज़ब का ढोल था। उसका मुख साढ़े–तीन हाथ चौड़ा था, और उस पर भैंस के चमड़े से बनी छाल कसी थी। ढोल मिला तो खुशी से फूला ना समाता बाघा बोल उठा, “मैं खड़े–खड़े ही बजाऊँगा।"

तब से खड़े–खड़े छड़ी से उस ढोल को वह बजाता। डेढ़ महाने दिन–रात बजाकर भी बाघा उस ढोल को फोड़ न पाया। तब तक उसका बजाना सुन–सुन उसके माँ–बाप पागल हो गए, गाँव के लोगों का सर चकराने लगा। कुछ और दिन इस तरह बीतते तो कहना मुश्किल है कि क्या होता, पर इसी बीच एक दिन गाँव के सारे लोग मोटे–मोटे लड्डु लिए इकट्ठे होकर आकर बाघा से बोले,"मेहरबानी हो भाई साहब! तुम्हें दस हँडिया भर मिठाई देंगे, कहीं और चले जाओ, नहीं तो हम सब पागल हो जाएँगे!"

बेचारा बाघा क्या करता! मजबूर होकर उसे दूसरे एक गाँव जाना पड़ा। वहाँ उसने मुश्किल से दो दिन बिताए होंगे कि वहाँ के सब लोगों ने मिलकर उसे गाँव से निकाल बाहर किया।

इसके बाद वह जहाँ भी जाता, वहाँ से उसे भगा दिया जाता। आखिर वह सारे दिन मैदानों में घूमने लगा, जब भूख लगती तो अपने गाँव जाकर ढोलक बजता और गाँव के लोग जल्दी–जल्दी उसे कुछ भोजन देकर वहाँ से विदा करते और कहते, "आफत छूटी !"

फिर ऐसी हालत हुई कि कोई उसे खाने को ही न दे। "इन बेवकूफों के पास भटकने से तो जंगल में चले जाना ही अच्छा होगा। अधिक से अधिक शेर ही काट खायेगा, पर मैं बजाता तो रहूँगा।" यह सोचकर बाघा ने अपना ढोलक गर्दन पर उठाया और जंगल में चला गया।

अब बाघा बड़े मज़े से रह रहा था, अब उसका बजाना सुनकर कोई लाठियाँ लिए उसे भगाने नहीं आता था। शेर का उसको खा जाना तो दूर की बात थी, उस वन में शेर –भालू कुछ नहीं थे। बस एक भयंकर जानवर है; बाघा ने आज तक उसे देखा नहीं है, बस दूर से उसकी आवाज़ सुनकर थर–थर काँपता है, और सोचता है, "अरे बाप रे! वह आ गया तो मुझे ढोलक सहित निगल जाएगा!"

वह भयंकर जानवर असल में कोई और नहीं, वह गोपी गवैया था। बाघा जिस आवाज़ को सुनकर काँपता था, वह दरअसल गोपी के रियाज़ की आवाज़ थी। गोपी को भी बाघा के ढोलक बजाने की आवाज़ सुनाई पड़ती और बाघा की तरह वह भी काँपता। आखिर एक दिन उसने सोचा, "इस जंगल में पता नहीं कब यूँ ही जान चली जाएगी, इससे तो अच्छा है कि अभी यहाँ से भाग निकलें।" यह सोचकर गोपी चुपचाप जंगल से निकल पड़ा। निकलते ही उसने देखा कि एक और आदमी एक बहुत बड़ा ढोलक सर पर उठाये उस जंगल से निकल कर आ रहा है। उसे देखकर आश्चर्यचकित हो गोपी ने पूछा, "अरे ! तुम कौन हो ? "

बाघा बोला, "मैं हूँ बाघा बजैया, तुम कौन हो? "

गोपी बोला, "मैं गोपी गवैया हूँ, तुम कहाँ जा रहे हो? "

बाघा बोला, "जहाँ भी जगह मिले, वहीं जाना चाहता हूँ। गाँव के लोग ऐसे गधे हैं, गाना–बजाना उनकी समझ से परे है, इसीलिए ढोल उठाकर जंगल आ गया था। पर भाई, यहाँ एक खूँखार जानवर की आवाज मैंने सुनी है, उसके सामने अगर फँस गया तो जान नहीं बचेगी। इसीलिए भाग जा रहा हूँ।

गोपी बोला, "अरे हाँ ! मैं भी तो एक जानवर की आवाज़ से परेशान होकर भाग रहा था। जरा बतलाओ, तुमने उस जानवर को कहाँ बैठकर चीखते सुना था ? "

बाघा बोला, "जंगल के पूर्वी किनारे से, बरगद के नीचे।"

गोपी बोला, "अच्छा, अरे वह तो मेरा ही गाना तुमने सुना है! वह किसी जानवर की आवाज़ थोड़े ही थी? और मैं जिस जानवर की बात कर रहा था, वह जंगल के पश्चिमी किनारे हरड़े के पेड़ के नीचे बैठकर चीखता है।"

बाघा ने कहा, "अरे, वह तो मेरे ढोल की आवाज़ है, मैं तो वहीं बैठता था!"

अब उनकी समझ में आया कि वे एक दूसरे का गाना और बजाना सुनकर ही डर से भागे जा रहे थे। फिर दोनों को खूब हँसी आई! काफी हँस लेने के बाद गोपी बोला, "भाई, जैसे मैं हूँ एक गवैया, वैसे ही तुम हो एक बजैया! अगर हम दोनों मिल जाएँ तो ज़रूर कुछ न कुछ कर पाएँगे!"

इस बात से बाघा भी बिल्कुल सहमत था। थोड़ी देर बातचीत के बाद उन लोगों ने तय किया कि वे दोनों मिलकर महाराज को गाना सुनाने जाएंगे। इससे महाराज को बड़ी ख़ुशी मिलेगी, इसमें तो कोई शक नहीं, ऐसा भी हो सकता है कि वे अपना आधा राज्य उनको दे दें और अपनी बेटी के साथ शादी भी करवा दें।

मन ही मन गोपी और बाघा यह सोचकर ख़ुशी से फूले न समा रहे थे कि वे महाराज को गाना सुनाने जा रहे हैं। दोनों हँसते–हँसते और नाचते–नाचते एक बहुत बड़ी नदी के तट पर आ पहुंचे। राजबाड़ी जाने के लिए इस नदी को पार करना पड़ता है।

नदी में नाव है, पर नाविक पैसे लेकर ही नाव पर चढ़ने देता है। बेचारे जंगल से आए, पैसे कहाँ उनके पास! उन्होने कहा, "भाई, हमारे पास पैसा–वैसा तो नहीं है, पर हम तुम्हें गाना–बजाना सुनाएंगे, हमें उस पार ले चलो।" इस पर नाव की दूसरी सवारियों ने बहुत खुश होकर नाविक से कहा, "हमलोग चंदा इकट्ठा कर इनका किराया दे देंगे, तुम इन्हें चढ़ा लो।"

बाघा का ढोलक देखकर नाविक को भी संगीत सुनने की बड़ी इच्छा हो रही थी, इसलिए उसने इस बात का कोई विरोध नहीं किया। गोपी और बाघा के चढ़ने पर नाव चल पड़ी। नाव लोगों से भरी हुई थी, उसमें बैठकर बजाने की जगह कहाँ होती! बड़ी मुश्किल से सबके बीच ज़रा सी जगह मिली, तब तक नाव भी मझधार में पहुँच चुकी थी। फिर ज़रा सा गुनगुनाकर गोपी ने गाना शुरू किया, बाघा ने ढोल पर छड़ी मारी, बस तुरंत नाव पर बैठे सभी लोग बहुत घबरा कर लोट–पोट होने लगे और एक दूसरे को थामने की कोशिश में उनसे नाव ही उलट गई।

यह तो बड़ी भारी विपदा आ गई। अच्छी बात यह थी कि बाघा का ढोल काफी बड़ा था, उसी को कस कर पकड़े रहकर दोनों ने जान बचाई। पर राजबाड़ी वे नहीं जा पाए।

दिन भर नदी की धार में बहते–बहते अंत में शाम हो गई, तब वे तट पर एक बहुत बड़े जंगल में पहुँच पाए। उस जंगल में दिन के वक़्त ही जाने पर डर से जान निकल जाती है, रात की तो बात ही मत पूछो। तब बाघा बोला, "गोपी भैया, यह तो बड़ी मुसीबत में फँस गए, अब बतलाओ क्या करें! " गोपी बोला, "करें क्या? मैं गाऊँगा, तुम बजाओगे। अगर शेर ने खाना है ही, तो उसे अपनी विद्या भी दिखला ही दें ? "

बाघा बोला, "ठीक है भैया! मरना ही है तो उस्तादों जैसे मरें, गाँव के भूतों जैसा मरना ठीक नहीं है।"

यह कहकर दोनों ने अपने गीले कपड़े पहने ही जी खोल कर गाना–बजाना शुरू किया। चूँकि उस दिन बाघा का ढोल गीला था, इसीलिए उसमें से गहरी–सी आवाज़ निकल रही थी। और गोपी भी इस यह सोच रहा था कि यह उसका आखिरी गीत है, इसलिए उसके गले की आवाज़ भी काफी भारी निकल रही थी। अरे, वह भी कैसा ज़बरदस्त संगीत था, क्या बतलाएँ! एक घंटा–दो घंटे होते–होते आधी रात बीत गई, पर उनका गाना रुका नहीं।

अचानक उन दोनों को लगा, जैसे चारों ओर कुछ अजीब सा हो रहा हो। पेड़ के ऊपर से हल्के–हल्के से, काले–काले से, बड़े–बड़े न जाने कौन झाँकने लगे थे। उनकी आँखें जल रही थीं, जैसे आग की भट्टियाँ हों, दाँत ऐसे निकले हुए थे जैसे सूखी मूलियाँ हो।

यह देखकर तुरंत अपने–आप ही बाघा का बजाना रुक गया, साथ ही दोनों के हाथ–मुँह सिकुड़ गए, पीठ टेढ़ी हो गईं, गर्दनें झुक गईं, आँखें निकल आईं और मुँह खुले–के–खुले रह गए। उनके शरीर इतनी बुरी तरह काँपने लगे और दाँत इस तरह किटकिटाने लगे कि उन्हें दौड़कर भागने की भी सुध न रही।

पर भूतों ने उनका कुछ न बिगाड़ा। वे उनका गाना–बजाना सुन कर बहुत खुश थे और उनको बुलाने आए थे कि उनके राजा के बेटे की शादी में गोपी और बाघा आएँ। संगीत रुकता देखकर उन्होंने नाक से आवाज़ निकालते हुए कहा, "रुक क्यों गए बाप? बजा, बजा, बजा!"

इस बात से गोपी और बाघा की हिम्मत ज़रा बढ़ी, उन्होंने सोचा, "यह तो बढ़िया रही, ज़रा गाकर ही देखें।" ऐसा कहकर ज्यों ही उन लोगों ने फिर गाना शुरू किया, तुरंत भूत बंधु एक–एक दो–दो कर पेड़ से उतर उनके चारों ओर नाचने लगे।

अरे, वह भी कैसी मस्ती थी, जिसने नहीं देखा, वह क्या समझे! अपनी पूरी ज़िंदगी में गोपी और बाघा ने ऐसे पारखी नहीं देखे थे। वह रात इसी तरह बीत चली। जब भोर होने को आई तो भूत तो बाहर नहीं रह सकते, इसलिए उससे ज़रा सा पहले उन्होंने कहा, "चलो भाई, हमारे सरदार के बेटे की शादी में चलो! तुम्हें खुश कर देंगे।"

गोपी बोला, "पर हमें तो राजाबाड़ी जाना है!" भूत बोले," अरे चले जाना, पहले हमारे घर भी ज़रा गाना–बजाना सुना जाओ! तुमलोगों को खुश कर देंगे।" आखिर वे दोनों ढोल लेकर भूतों के घर चले। वहाँ जो गाना–बजाना हुआ, उसके बारे में कुछ कहने की ज़रुरत नहीं है। उसके बाद उनको विदा करते वक़्त भूतों ने कहा "तुमलोग क्या चाहते हो? "

गोपी बोला, "हम यह चाहते हैं कि हम गा–बजाकर सबको खुश कर सकें। "

भूतों ने कहा, "ऐसा ही होगा, जो भी तुम लोगों का गाना–बजाना सुनेंगे, संगीत समाप्त होने के पहले कोई उठकर नहीं जाएगा। और क्या चाहते हो ? "

गोपी बोला, "और इतना ही चाहते हैं कि हमें खाने–पहनने में कोई कमी न हो।" यह सुनकर भूतों ने उन्हें एक थैला दिया और कहा, "जब भी तुम जो कुछ खाना चाहो या पहनना चाहो, इस थैले में हाथ डालते ही वह तुम्हें मिल जाएगा। और क्या चाहते हो ? "

गोपी बोला, "और क्या चाहें वह तो हमारी समझ में नहीं आ रहा !" तब भूतों ने हँसते–हँसते उन दोनों को दो जोड़े जूते ला दिए और कहा, "इन जूतों को पैरों में पहन कर तुम लोग जहाँ भी जाना चाहोगे, तुरंत पहुँच जाओगे। "

तो अब परेशानी की बात ही क्या रही। गोपी और बाघा ने भूतों से विदा ली, पैरों में वे जूते पहन लिए और कहा, "तो अब हम राजबाड़ी जाएँगे!" तुरंत वह बड़ा जंगल पता नहीं कहाँ गायब हो गया। गोपी और बाघा ने देखा कि वे दोनों एक बहुत बड़े महल के दरवाज़े के सामने खड़े हैं। इतना बड़ा और सुन्दर मकान उन लोगों ने अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं देखा था। तुरंत उन लोगों ने समझ लिया कि यह राजबाड़ी है।

पर इसी बीच एक मुसीबत आ खड़ी हुई। राजबाड़ी के फाटक पर यमदूत सरीखे कुछ दरबान खड़े थे, उन लोगों ने जैसे ही गोपी और बाघा को ढोल सहित आते देखा, तो दाँत पीसकर पूछा, "अबे ओ! कहाँ जाते हो ? "

गोपी ने घबराते हुए कहा, "दादा, महाराज को संगीत सुनाने आये हैं। " इससे वे दरबान और भी बिगड़ गए और उन्होंने लाठियाँ तानकर कहा, "भागो यहाँ से!" गोपी ने भी तब नाक सुड़ककर कहा, "अरे वाह ! हम तो महाराज के पास जाएँगे ही। "

ऐसा कहते ही उन जूतों की बदौलत, वे तुरंत महाराज के सामने उपस्थित हुए। राजबाड़ी के अन्तःपुर में महाराज सोये हुए थे, रानी उनके सिर के पास बैठ उन्हें पंखे से हवा कर रही थी, इसी समय न कही न सुनी, उस भयंकर ढोल के साथ गोपी और बाघा वहाँ आ खड़े हुए। जूतों में ऐसा गुण था कि सभी दरवाज़े–खिड़की बंद थे, फिर भी वे कहीं अटके नहीं। पर आते हुए अटके ना अटके, पर वहाँ पहुँच कर अड़ंगा लग ही गया। उन्हें देखकर बहुत घबराकर रानी चीख पड़ी और तभी बेहोश हो गई। महाराज उछल कर पागलों की तरह इधर–उधर दौड़ने लगे, पूरी राजबाड़ी में अफरा–तफरी मच गई। सिपाही–संतरी सब ढाल–तलवार लेकर दौड़े आए।

गड़बड़ होती देख गोपी और बाघा का सिर चकरा गया। अगर वे तब बस इतना कह देते, "हम यहाँ से अमुक जगह जाएँगे", तो उनके जूतों के गुण से सारी समस्या ही ख़त्म हो जाती। पर यह बात उनके दिमाग में नहीं आई। वे दौड़कर भागने की कोशिश में दो ही कदम जा पाए थे कि बेचारों पर ऐसी मार पड़ी! जूते, लाठी, चाबुक, घूसे, थप्पड़, कान खिंचाई, कुछ भी बाकी न बचा। अंत में महाराज ने हुक्म दिया, "सालों को तीन दिन तक कारागार में बंद रखो। उसके बाद इनकी सुनवाई होगी, या तो इनके सिर कटवाऊँगा, या सूली पर चढ़वाऊँगा, या कुत्तों को खिलवाऊँगा।"

हाय रे गोपी! हाय रे बाघा! बेचारे यह सोचकर आए थे कि राजा को संगीत सुनाकर उन्हें खूब सारी बख्शीश मिलेगी, और इसी बीच यह कैसी आफत में फँस गए! प्यादों ने उनके हाथ बाँध दिए और उन्हें पीटते–पीटते एक अँधेरे कमरे में ले जाकर डाल दिया। इसमें भी ऐसी कोई तकलीफ की बात न थी, पर बाघा का ढोल चला गया, यही सबसे खतरनाक बात थी! बाघा सीना और सिर पीट–पीटकर चीख–चीख कर रोने लगा और बोला, "ओ गोपी भैया! ओह–ओह–ह–ह–ह–ह– ह–अ! अरे ओ गोपी भैया! मार खाई, जान चली जाए, इसका दुःख नहीं है –– पर भैया, मेरा ढोल तो गया!"

इसी बीच गोपी का दिमाग शांत हो आया था। उसने बाघा के शरीर और सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "रोने की क्या बात है, भैया? ढोल ही गया, जूता और थैला तो हैं! हमलोग बड़े बेवकूफ़ हैं, इसीलिए इस तरह मार खायी। खैर, जो होना था हुआ, अब ज़रा कुछ मज़ा लूटा जाए।" बाघा यह सुन ज़रा शांत हुआ और उसने पूछा, "मज़ा क्या लूटेंगे भैया? " गोपी बोला, "पहले मज़े से खा लें, फिर दूसरी बातों की सोचेंगे। "

यह कहकर उसने भूतों की दी हुई उस थैली में हाथ डालकर कहा, "लाओ यार, एक हंडिया पुलाव लाओ।" तुरंत एक कमाल की सुगंध चारों ओर फैल गई ! ऐसा पुलाव आमतौर पर राजा लोग भी नहीं खा पाते। और वह ऐसी एक बड़ी हंडिया थी! गोपी की क्या औकात कि उसे थैले में से निकाल बाहर करे! खैर, किसी तरह उसे बाहर निकाल लिया और थैली से कहा, "तले व्यंजन, चटनी, मिठाई, दही, रबड़ी, शरबत! तुरंत, तुरंत लाओ !" देखते–देखते खाने की चीज़ों और सोना–चाँदी के बर्तनों से घर भर गया। आखिर दो लोग कितना खा सकते थे? इतना बढ़िया खाना खाकर उनका दुःख न जाने कहाँ उड़ गया।

तब बाघा बोला, "भैया, चलो इसी वक़्त यहाँ से भागते हैं, नहीं तो कुत्तों से नुचवाएँगे?

"अरे सब्र करो, देखते हैं क्या होता है।" यह सुनकर बाघा बड़ा खुश हुआ। वह समझ गया कि गोपी भैया कुछ मजेदार वाकया करने वाले थे।

दो दिन हो गए, और उनकी सजा सुनाने में एक दिन बाकी रह गया। सुनवाई के दिन रात–ही–रात गोपी ने थैले में हाथ रख कहा, "हमें राजवेश चाहिए।" ऐसा कहते ही उसमें से ऐसे बढ़िया कपड़े निकले जैसे कि कोई बुनने–सीने की सोच ही नहीं सकता था। दोनों ने वे कपड़े पहने और उन बर्तनों की एक पोटली बनाई, फिर जूते पहनकर बोले, "अब हम मैदानों में हवा खाने जाएँगे।" बस, आँख खुली तो देखा कि राजबाड़ी के बाहर बहुत बड़े एक मैदान में आ गए हैं। उस मैदान में एक जगह अपनी पोटली छिपाकर, घूमते–घामते वे राजबाड़ी के सामने आ खड़े हुए।

दूर से ही उन्हें आते देखकर राजा के लोगों ने दौड़कर उन्हें खबर पहुंचाई, "महाराज, दो राजा आ रहे हैं।" यह सुनकर राजा भी अपने फाटक पर आ खड़े हुए थे। ज्यों ही बाघा और गोपी पहुँचे, वे उन्हें बड़े सम्मान के साथ महल के अन्दर ले गए। एक बहुत बढ़िया कमरे में उनके ठहरने का प्रबंध हुआ। कितने नौकर ब्राह्मण, प्यादे, सेवादार

उनकी सेवा में लग गए, इसका अंत न था।

इसके बाद गोपी और बाघा हाथ–मुँह धो नाश्ता कर ज़रा आराम से बैठे, तो महाराज उनकी खबर लेने आये। उनका पहनावा देखते ही उन्होने सोचा कि 'पता नहीं कितने बड़े राजा हैं!' फिर अंत में जब उन्होने गोपी से पूछ लिया कि "आप लोग किस देश के राजा हैं? " तो गोपी ने हाथ जोड़कर कहा, "महाराज! हम राजा कैसे? हम तो आपके नौकर हैं !"

गोपी ने सच ही कहा था, पर राजा को इस पर यकीन न हुआ। उन्होंने सोचा, "कितने अच्छे लोग हैं, कैसी नम्रतापूर्वक बातें करते हैं। जितने बड़े राजा हैं, उतने ही शरीफ भी हैं।" उस वक़्त अधिक कुछ न कहकर उन दोनों को वे सभा में ले आए। उस दिन वहाँ उन दोनों लोगों को सजा सुनाई जानी थी।– तीन दिनों पहले जो उनके सोने के कमरे में घुस गए थे। अदालत का समय हो गया, उन दो असामियों को लाने प्यादे भेजे गए; पर उनको वे अब कहाँ ढूँढें? इन तीन दिनों तक उनके कमरे पर ताला लगा हुआ था, जब ताला खोला गया तो देखा गया, वहाँ कोई नहीं है, खाली कमरा पड़ा हुआ है।

तब ज़बर्दस्त दौड़धूप और अफरा–तफरी शुरू हो गई। दारोगाजी बड़े परेशान होकर प्यादों को डाँटने लगे। प्यादों ने हाथ जोड़कर कहा, "हुजूर ! हमारा कोई कसूर नहीं, हम लोगों ने ताला लगाकर रखा था, इसके अलावा शुरू से दरवाज़े के सामने खड़े भी थे। वे दो लोग इंसान तो थे नहीं, वे भूत थे; नहीं तो इसमें से निकलकर वे भागे कैसे? "

इस बात पर सबको यकीन हुआ। पहले महाराज भी दारोगा पर बिगड़कर उसका गला ही कटवा देने को थे, पर अंत में यह बात सुनकर बोले, "हाँ, वे लोग ज़रूर भूत ही थे। मेरा कमरा भी तो बंद था, उसमें इतना बड़ा ढोल लेकर कैसे आए।

यह सुनकर सबने कहा, "हाँ, हाँ, ठीक, ठीक, वे दोनों भूत थे !" कहते–कहते उनके शरीर काँपने लगे। बदन से पसीना बहने लगा। तब बाघा के उस ढोल की बात याद कर वे बोले, "महाराज ! भूत का ढोल बड़ी खतरनाक चीज़ है। उसे कभी भी अपने कमरे में न रखें। उसे अभी जला दीजिए। "

महाराज भी बोले, "बाप रे! भूत का ढोल कमरे में पड़ा है? तुरंत उसे जला दो। "

महाराज ने जैसे ही यह बात कही, तुरंत बाघा हाथों से दोनों आँखें ढँक, "आय–हाय–हाय आय" चीखकर रोते–रोते लोटपोट होने लगा।

उस दिन बाघा को सँभालने में गोपी को बड़ी दिक्कत हुई। ढोल जलाने की बात होते ही बाघा ने रोना शुरू कर दिया, अगर वे ढोल को लाकर उसमें आग लगा ही डालें, तो पता नहीं वह क्या कर बैठेगा! तब इस बात को बाघा छिपाएगा कैसे कि वह ढोल उसी का है? कैसी बड़ी आफत है ! अब शायद पकड़े ही जाएँ और जान खो बैठें।

गोपी की बड़ी इच्छा थी कि वह बाघा को लेकर दौड़ भागे। पर अब तो ऐसा संभव ही नहीं था, सभा में बैठते वक़्त उन जूतों को तो पैरों से उतारकर रखना पड़ा था।

इसी बीच बाघा की यह हालत देखकर सभा में ज़बर्दस्त अफरा–तफरी शुरू हो गई। सबने सोचा, बाघा को कोई गंभीर बीमारी हो गई होगी, अब वह और जी नहीं सकता। राजबाड़ी के वैद्यजी आकर बाघा की नब्ज़ थामकर बेहद चिंता के साथ सिर हिलाने लगे। बाघा को बहुत सारी जुलाब की दवाएँ खिलाकर पेट पर पट्टी लगा दी गई। इसके बाद वैद्यजी ने कहा कि, "अगर इस पर भी दर्द नहीं रुकता, तो पीठ पर एक और, उससे भी न हो तो दोनों ओर दो पट्टियाँ लगानी होंगी। "

यह बात सुनते ही बाघा का रोना तुरंत रुक गया। तब सबने सोचा की वैद्यजी ने कितनी बढ़िया दवा दी है, दवा देते ही दर्द ख़तम हो गया।

खैर, बाघा ने देखा कि उसके रोने से ढोल को जला देने की बात अब दब गई है, तब उस पट्टी की मुसीबत झेलते हुए भी उसका मन कुछ हद तक शांत हुआ। महाराज इसके बाद बड़े सम्मान के साथ उसे अपने कमरे में लिटा आए; गोपी उसके पास बैठकर पट्टी पर हवा देने लगा।

फिर जब सब कमरे से निकल आए तो गोपी ने बाघा से कहा, "छिः भैया, जहाँ–तहाँ इस तरह नहीं रोना चाहिए! अब सोचो ज़रा, कैसी मुसीबत आ गई।" बाघा बोला, "अगर मैं न रोता, तो अब तक मेरे ढोल को जलाकर ख़त्म कर दिया होता। अब थोड़ी–बहुत तकलीफ ज़रूर हो रही है, पर मेरा ढोलक तो बच गया!"

बाघा और गोपी इस तरह आपस में बातचीत कर रहे थे। इसी बीच महाराज जब सभा में वापस लौट आये तो

दारोगाजी ने उनके कानों में धीरे से कहा, "महाराज, एक बात है, अगर इजाज़त हो तो बतलाऊं।" राजा बोले, "कैसी बात? " दारोगा बोले, "वह जो आदमी लोट–पोट होकर रो रहा था, वह और उसका साथी वह दूसरा, ये वही दो भूत हैं; मैं उन्हें पहचान गया हूँ।" राजा बोले, "अरे हाँ, मुझे भी कुछ ऐसा ही लग रहा था। यह तो बड़ी मुसीबत आ खड़ी हुई। अब बतलाओ कि क्या किया जाए? "

तब इस बात पर सभा में जोर से कानाफूसी शुरू हो गई। किसी ने कहा, "ओझा बुलाओ – उन दोनों को भगा दे। " एक और कोई बोला, "ओझा अगर इन्हें भगा न पाए, तब ये दोनों बिगड़कर भयंकर कुछ कर बैठेंगे। इससे बेहतर तो यह होगा कि रात को जब वे सो रहे हों तो उन्हें जलाकर मार दीजिए। "

यह बात सबको जँच गई, पर इसमें मुसीबत यह आई कि भूतों को जलाया जाए तो राजबाड़ी में भी आग लग सकती है। अंत में बहुत सोच–विचार के बाद यह तय हुआ कि एक बागानबाड़ी में उन्हें रहने को कहा जाए – बागानबाड़ी अगर जल भी जाए तो कोई खास नुकसान न होगा। तब महाराज बोले कि, "उस ढोल को भी फिर इस बागानबाड़ी में रख दिया जाए; तब बागानबाड़ी को जलाया जायेगा, तो एक साथ सारी परेशानियाँ ख़त्म हो जायेंगी।

बागानबाड़ी में जाने की बात सुन गोपी और बाघा बहुत खुश हुए। उन्हें तो कुछ पता न था कि इसमें कितना भयंकर फंदा है; उन बेचारों ने सोचा कि चलो आराम से एकांत में रहेंगे, संगीतचर्चा भी ढंग से होगी। जगह बड़ी निर्जन और सुन्दर थी। मकान लकड़ी का था, पर देखने में बढ़िया था। वहाँ पहुँचकर देखते–ताकते बाघा की तबियत सुधर गई। तब गोपी ने उससे कहा, "भाई, अब और यहाँ रहकर क्या करें? चलो हम लोग यहाँ से चले जाएँ।" बाघा बोला, "भैया, ऐसी सुन्दर जगह में रहने की किस्मत तो हमारी नहीं है, क्यों न दो दिन ठहर ही जाएँ। आह! अगर मेरा ढोलक पास होता!"

उस दिन बाघा घर में इस कमरे से उस कमरे में टहल रहा था, गोपी बगीचे में एक जगह बैठकर गुनगुना रहा था, अचानक बाघा जोरों से चिल्ला उठा। उसकी बातें पूरी समझ में नहीं आईं, केवल, "गोपी भैया ! ओ गोपी भैया" पुकार खूब सुनाई पड़ने लगी। तब दौड़कर आकर गोपी ने देखा कि बाघा अपना वह ढोल सिर पर लिए पागलों सा नाच रहा था, और अंट–संट अनाप–शनाप बोलते हुए "गोपी भैया, गोपी भैया।" कहकर चीख रहा था। ढोल वापस पाकर उसे

इतनी ख़ुशी मिली कि वह आराम से खड़ा नहीं हो पा रहा था, ढंग से बात भी नहीं कर पा रहा था। इस तरह करीब आधा घंटा हो जाने पर बाघा ने ज़रा शांत होकर कहा, "गोपी भैया, देखा तुमने –– इस कमरे में मेरा ढोलक –– अरे मज़ा आ गया –– हा: हा: हा:," कहकर दस मिनटों तक वह खूब नाचता रहा। इसके बाद उसने कहा, " भैया, इतनी तकलीफ के बाद यह ढोलक मिला है, एक गाना गाओ, ज़रा मज़ा लें।" गोपी बोला, "इस वक़्त बड़ी भूख लगी है। " खाना–पीना हो जाए, फिर रात को बरामदे में बैठकर दोनों खूब गाएँगे – बजाएँगे। "

इधर महाराज ने तय किया था कि उस रात उनको जला मारेंगे। दारोगा को आदेश दिया गया था कि उस शाम उस बगानबाड़ी में एक विशाल भोज का बंदोबस्त करना होगा। दारोगा जी पचास–साठ लोगों के साथ भोज में मौजूद रहेंगे। खा–पीकर गोपी और बाघा जब सो जाएँगे, तब वे सब मिलकर एक साथ उस लकड़ी के मकान को चारों ओर से आग लगाकर उनके भागने का रास्ता बंद कर देंगे।

उस दिन भोजन बड़ा अच्छा रहा। गोपी और बाघा ने सोचा कि लोगों के चले जाते ही गाना–बजाना शुरू करेंगे, दारोगाजी ने सोचा कि गोपी और बाघा के सोते ही वे आग लगवाएँगे। वे बड़ी कोशिश करने लगे कि वे दोनों सो जाएँ। उनके हाव–भाव से जब यह स्पष्ट हो गया कि उनके न सोने पर वे वहाँ से निकलेंगे नहीं, तब गोपी बाघा के साथ बिस्तर पर लेटकर खर्राटे भरने लगा।

कुछ देर में  गोपी और बाघा ने देखा कि सब लोग चले गए थे, किसी के होने की कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। थोड़ी देर और इंतज़ार के बाद जब लगा कि बागीचा बिल्कुल खाली हो गया है, तब वे दोनों मिलकर बरामदे में आकर ढोल बजाकर गाना शुरु कर दिए।

इसी बीच दारोगाजी ने अपने लोगों से कह दिया, "तुम सब हर दरवाज़े पर अच्छी तरह आग लगाओगे; खबरदार, अच्छी तरह आग लगने से पहले कोई वापस मत लौटना।" वे खुद सीढ़ियों पर आग लगाने गए; अच्छी–खासी आग लग गई, दारोगाजी सोच ही रहे थे, "अब भाग चलें" – उसी वक़्त बाघा का ढोल बज उठा, गोपी ने गाना शुरू कर दिया। अब दरोगाजी और उनके लोगों के लिए दौड़ भागना संभव न था, सबको जलकर मरना पड़ा। इसी बीच आग भड़कती देखकर, गोपी और बाघा भी अपने जूते पहन, ढोल और थैला लिए वहाँ से नौ–दो–ग्यारह हो गए।

उस दिन की आग में दारोगाजी तो जलकर मर ही गए, उनके साथ आए लोगों में बहुत कम ही बच पाए थे। जब उन लोगों ने जाकर महाराज को इस घटना की खबर सुनाई तो उनके मन में बड़ी घबराहट हुई। दूसरे दिन और भी दो–चार लोग राजसभा में आए बोले कि वे आग का तमाशा देखने वहाँ गए थे; तब उन लोगों ने बड़ा अजीब संगीत सुना और दोनों भूतों को अपनी आँखों से शून्य में उड़ जाते देखा। यह सुनकर राजाजी तो यूँ कांपने लगे! उस दिन बेचारे सभा में बैठ न सके। जल्दी से महल के अन्दर आकर भूत के डर से दरवाज़े बंद कर रजाई में छिपकर साँस लेते रहे, फिर एक महीने तक बाहर नहीं निकले।

इधर गोपी और बाघा उस आग में से निकल भाग अपने घर के पास उस जंगल में आकर उतरे, जहाँ वे पहले एक दूसरे से मिले थे। इतनी घटनाओं के बाद अपने माता–पिता से मिलने के लिए उनका जी मचलने लगा। जंगल में आते ही बाघा बोला, "गोपी भैया, यहाँ हमारी पहली मुलाक़ात हुई थी न?" गोपी बोला, "हाँ।" बाघा बोला, "तो ऐसी जगह आकर बिना गाना–बजाना किए चले जाना क्या ठीक होगा?" गोपी बोला, "ठीक कहा भैया। तो फिर अब देर क्यों करें? अभी शुरू कर दो।" यह कहकर वे जी खोलकर गाने लगे।

इसी बीच एक आश्चर्यजनक घटना हुई। डाकुओं का एक गिरोह हाल्ला–नगरी के राजा का खजाना लूट, उसके दो छोटे बच्चों को चोरी कर भागकर इस ओर आ रहा था, राजा कई सिपाहियों सहित उनका जी–जान से पीछा करते हुए भी उन्हें पकड़ नहीं पा रहे थे। गोपी और बाघा जब गा रहे थे, उसी वक़्त वे डाकू भी वन में से होकर गुज़र रहे थे। पर वह गाना एक बार सुनने पर तो उसे अंत तक सुने बिना चले जाने का कोई उपाय न था, इसलिए डाकुओं को वहाँ रुकना पड़ा। सारी रात वह गाना–बजाना भी न रुका और डाकू भी वहाँ से निकल न पाए। सुबह हाल्ला के राजा ने आकर बड़ी आसानी से उन्हें पकड़ लिया। इसके बाद जब उन्हें पता चला कि गोपी और बाघा के संगीत के गुण से ही उन्होंने डाकुओं को पकड़ा, फिर तो उनकी सेवा का कोई अंत नहीं रहा। राजकुमारों ने भी कहा, "पिताजी, ऐसा अद्भुत संगीत पहले कभी नहीं सुना, इनको साथ ले चलो।" इसलिए राजा ने गोपी और बाघा को कहा, "तुमलोग हमारे साथ चलो। तुम्हें पाँच सौ रुपये महीने की तनख्वाह मिलेगी।"

यह सुनकर गोपी ने हाथ जोड़कर राजाजी को नमस्कार किया और कहा, "महाराज, कृपया हमें दो दिनों के लिए छुट्टी

दें। हम अपने माता–पिता से मिलकर उनकी अनुमति लेकर आपकी राजधानी में आ जाएँगे।" राजा बोले, "अच्छा, अगले दो दिन हम इस वन में ही आराम करेंगे। तुम लोग अपने माँ–बाप से मिलकर दो दिनों बाद हम से यहीं मिलो।"

गोपी को निकाल भगाने के बाद से उसका पिता उसके लिए बड़ा ही दुखी था, इसलिए उसे लौट आते देख उसे बड़ी ख़ुशी हुई। पर बेचारे बाघा के भाग्य में यह सुख नहीं था। उसके माता–पिता कुछ दिनों पहले मर चुके थे।

गाँव के लोगों ने जब उसे सिर पर ढोल लेकर आते देखा तो कहा, "अरे रे! वह साला बाघा लौट आया है, फिर हमें परेशान कर छोड़ेगा, मारो साले को!" बाघा ने नम्रतापूर्वक कहा, "मैं सिर्फ अपने माँ–बाप से मिलने आया हूँ; दो दिन ठहरकर चला जाऊँगा, बजाऊँगा–वजाऊँगा नहीं। " पर यह बात सुने कौन? उन्होंने दाँत पीसकर उसे माँ–बाप की मौत की खबर सुनाई और वे लाठियाँ लेकर उसे मारने आए। वह जी–जान बचाकर दौड़ा। लेकिन उन्होंने पत्थर मार–मार उसके पैर तोड़ दिए, सिर फोड़ दिया और वह खून से लथपथ हो गया।

गोपी अपने घर के आँगन में बैठ अपने पिता के साथ बातचीत कर रहा था, तभी उसने देखा कि बाघा पागलों सा लँगड़ाते–लँगड़ाते दौड़ते हुए आया; उसके कपड़े फटकर चीथड़े हो गए थे और खून से लाल हो गए थे। वह तुरंत दौड़कर बाघा के पास गया और पूछा, "यह क्या हुआ? तुम्हारी ऐसी हालत कैसे हुई? " गोपी को देखते ही बाघा खूब मुस्कुराया। फिर उसने हाँफते हुए कहा, "भैया, किसी तरह बच कर के आया! जरा देर और होती तो बेवकूफों ने मेरा ढोलक ही तोड़ देना था!" गोपी के घर पर गोपी की देखभाल और उसके माँ–बाप के प्यार से बाघा के दो दिन जितना हो सका, सुखपूर्वक ही बीते। दो दिनों बाद गोपी अपने माँ–बाप से विदा लेते हुए कह गया, "तुम लोग तैयार रहना। मुझे फिर छुट्टी मिलते ही मैं तुम्हें ले जाऊँगा।"

उसके बाद कई महीने बीत गए। गोपी और बाघा अब हाल्ला के राजा के घर बड़े सुखपूर्वक रहते हैं। देश–विदेश में उनका नाम फ़ैल चुका है– "ऐसे उस्ताद कभी नहीं हुए, होंगे भी नहीं!" राजाजी उनको बड़ा प्यार करते हैं; उनके गीत सुने बिना एक दिन भी नहीं रह सकते। अपने सुख–दुःख की बातें सब गोपी को बतलाते हैं। एक दिन गोपी ने देखा कि राजाजी के चेहरे पर बड़ी उदासी छाई हुई है। वे लगातार किसी सोच में डूबे जा रहे हैं, जैसे वे किसी बड़ी विपदा में हों।

आखिर उन्होंने गोपी से कहा, "गोपी! बड़ी मुसीबत में पड़ गया हूँ, पता नहीं क्या होगा। शुंडी–नगर का राजा मेरा राज्य छीनने आ रहा है।" शुंडी का राजा वही था, जिसने गोपी और बाघा को जलाकर मारना चाहा था। उसका नाम सुनते ही गोपी के दिमाग में एक बढ़िया चाल सूझी। उसने राजाजी से कहा, "महाराज ! आप इसकी चिंता न करें, आप इस गुलाम को हुक्म दें, मैं इसे एक मजाक बनाकर छोडूंगा।" राजा ने हँसकर कहा, "गोपी, तुम गवैये–बजैये हो, जंग–लड़ाई के पास नहीं फटकते, इसके बारे में तुम क्या समझोगे? शुंडी के राजा की बहुत बड़ी सेना है, मैं उसका क्या बिगाड़ सकता हूँ? " गोपी बोला,"महाराज, हुक्म हो तो एक बार कोशिश कर सकता हूँ। कोई नुकसान तो नहीं है।" राजा बोले, "जैसी तुम्हारी मर्ज़ी, तुम कर सकते हो।" यह सुनकर गोपी खुशी से फूला न समाया, उसने बाघा को बुलाया और सलाह–मशविरा शुरू किया।

गोपी और बाघा उस दिन बड़ी देर तक सोच–विचार करते रहे। बाघा जोश से भरपूर था। वह बोला, "भैया, अब हम दोनों मिलकर कुछ न कुछ करके ही रहेंगे। मुझे बस एक बात का डर है, अगर अचानक जान बचाकर भागने की ज़रुरत हो, तो शायद मैं जूतों की बात भूलकर आम लोगों कि तरह दौड़ने लगूँगा और फिर मुझ पर बुरी तरह मार पड़ेगी। ऐसे ही देखो, उस बार हमारे गाँव के बेवकूफों ने मेरा हुलिया ही बिगाड़ दिया था न!"

खैर, गोपी के समझाने पर बाघा का डर कम हुआ। दूसरे दिन से उन्होंने काम शुरू किया। कुछ दिनों तक वे रोज़ रात को शुंडी जाते रहे, और राजबाड़ी के आसपास घूमकर वहाँ की खबरें इकट्ठी करते रहे। जंग का जैसा इंतज़ाम उन्होंने देखा, वह बड़ा भयंकर था; ऐसा इंतज़ाम लेकर अगर हाल्ला में जा पहुँचें, तो बचना मुश्किल है। राजा के मंदिर में रोज़ धूमधाम से पूजा हो रही है। दस दिनों तक इस तरह पूजा करने के बाद देवता को खुश कर वे हाल्ला–नगर को रवाना होंगे।

गोपी और बाघा ने यह सब देखा; फिर एक दिन अपने कमरे में बैठ, दरवाज़ा बंद कर, भूतों की दी हुई उस थैली से कहा, "नए किस्म की मिठाइयाँ चाहिए, खूब स्वादिष्ट।" इस पर उस थैली से जो मिठाइयाँ निकलीं, वह कहकर समझाया नहीं जा सकता। ऐसी मिठाइयाँ पहले किसी ने कभी नहीं खाईं, आँखों से भी नहीं देखीं। इन मिठाइयों को लेकर बाघा और गोपी शुंडी के राजा के देवालय के बड़े मंदिर की चोटी पर जा बैठे। नीचे खूब पूजा की धूम थी––

बेहद धूप–धूनी शंख–घंटा शोरगुल चल रहा था, आँगन लोगों से खचाखच भरा हुआ था। उन सब लोगों के सिर पर धड़ाम से सारी मिठाइयाँ डालकर, बाघा और गोपी भी मंदिर की चोटी को कस कर पकड़े बैठ तमाशा देखने लगे। अँधेरे में उस धूप–धूनी और प्रकाश के धुँए में कोई उन्हें देख न पाया।

मिठाइयाँ आँगन में गिरते ही शोरगुल रुक गया। कई लोग कूद पड़े, कोई–कोई तो चीख कर दौड़ भी लिए। उसके बाद दो–चार हिम्मती लोग कुछ मिठाइयाँ उठाकर, डरते–डरते रोशनी के पास ले जाकर उन्हें देखने लगे। अंत में उनमें से एक ने आँखें बंद कर थोड़ा सा मुँह में डाला; डालते ही –फिर क्या था –– वह दोनों हाथों से आँगन से मिठाइयाँ उठाकर मुँह में डाले नाचने लगा और ख़ुशी से चीखने लगा। तब उस आँगन में मौजूद सभी लोग मिठाइयाँ खाने के लिए पागलों की तरह छीना–झपटी कर हो–हल्ला करने लगे।

इसी बीच कुछ लोगों ने दौड़कर जाकर राजाजी से कहा, "महाराज! आज ईश्वर ने पूजा से संतुष्ट होकर स्वर्ग से प्रसाद भेजा है। वह इतना बढ़िया प्रसाद है कि हम बतला भी नहीं सकते।" यह बात सुनते ही राजा चड्डी पहनते–पहनते लम्बी–लम्बी साँसें लेते जी–जान से दौड़ते मंदिर आए।

पर हाय! तब तक सारा प्रसाद ख़त्म हो गया था। सारे आँगन में झाड़ू लगाकर भी राजाजी के लिए प्रसाद का ज़रा सा चूरा भी नहीं मिला। तब उन्होंने बड़े गुस्से में कहा, "तुम लोग बड़े जाहिल हो! मैं पूजा करूँ और प्रसाद खाकर ख़त्म करते हो तुम! मेरे लिए ज़रा सा चूरा भी नहीं रखा! तुम सबको पकड़कर शूली पर चढाऊँगा!" यह सुनकर सबने डरते–डरते हाथ जोड़कर कहा, "दुहाई हो महाराज! हम आपका प्रसाद खाकर भला क्यों ख़त्म करें? अजीब बात है! हमने खाने की कोशिश भर की थी, पता नहीं कैसे झट से ख़त्म हो गया! आज हमने जो प्रसाद खाया, उसके लिए आप हमें माफ़ कर दें, कल जो भी प्रसाद मिलेगा वह महाराज अकेले ही खाएँगे। तब राजा ने कहा, "अच्छा, ऐसा ही होगा। खबरदार! भूल मत जाना।"

अगले दिन राजाजी प्रसाद खाएँगे, इसीलिए पहले पहर से ही वे मंदिर के आँगन में बैठकर आस्मान की ओर ताककर बैठे थे। बाकी सब लोग डरे हुए थोड़ी दूर बैठकर उनको घेरकर तमाशा देख रहे थे। आज पूजा का आड़ंबर और दिनों की अपेक्षा सौ गुना अधिक था। सब सोच रहे थे कि भगवान खुश होकर राजाजी को और भी बढ़िया प्रसाद देंगे।

आधी रात के वक़्त गोपी और बाघा और भी बढ़िया किस्म की मिठाइयाँ लिए मंदिर की चोटी पर आ बैठे। आज उन्होंने और भी बढ़िया कपड़े पहन रखे थे, सर पर मुकुट, गले में हार, हाथों में कड़े, कानों में कुंडल; वे देवता बनकर आये थे।

धुएँ की वजह से कुछ दिखलाई नहीं पड़ रहा था, फिर भी राजाजी आस्मान की ओर ताकते हुए बैठे हुए थे। इसी वक़्त गोपी और बाघा ने हँसते–हँसते उनके ऊपर उन मिठाइयों को फेंक दिया। इस पर पहले तो राजाजी चीखकर तीन हाथ ऊँचाई तक कूद पड़े, फिर जल्दी ही सँभलकर वे दोनों हाथों से मिठाइयाँ मुँह में डालने लगे, फिर झूम–झूम कर, वाह, कैसा नाच उन्होंने नाचा!

ठीक उसी वक्त गोपी और बाघा अचानक मंदिर के शिखर से उतर कर राजा के पास आ खड़े हुए। उनको देखकर सब 'भगवान आए' कहकर कौन पहले प्रणाम करे, सोचकर तय नहीं कर पा रहे थे। राजाजी तो लम्बे होकर ज़मीं पर लेट ही गए और केवल सिर ठोकते जा रहे थे। गोपी ने उनसे कहा, "महाराज! तुम्हारा नाच देखकर हम संतुष्ट हुए हैं; आओ अब ज़रा गले मिल लें।" राजा ने यह सुना क्या, उन्हें तो जैसे हाथों में स्वर्ग मिल गया, देवता के साथ गले मिलना, यह कोई कम सौभाग्य की बात न थी!

गले मिलना शुरू हुआ। सभी लोग 'जय हो, जय हो' कहकर चीखने लगे। तभी मौका पाकर गोपी और बाघा ने राजाजी को अच्छी तरह बाँहों में जकड़कर कहा, "तो अब अपने कमरे में चलें!" ऐसा कहते ही वे लोग उनको साथ लिए अपने कमरे में आ उपस्थित हुए। मंदिर के आँगन में लोग काफी देर तक मुँह खोले आकाश की ओर ताकते रहे। इसके बाद राजाजी और लौटकर नहीं आए, तब वे अपने–अपने घर लौट आए और बोले, "कितने आश्चर्य की बात देखी ! राजाजी जिंदा स्वर्ग चले गए! देवता लोग खुद उन्हें लेने आए थे!"

इधर राजाजी गोपी और बाघा की गोद में बेहोश पड़े हुए थे। उनके कमरे में आकर भी बहुत देर तक उनको होश नहीं आया। जब भोर हुई तो उनकी आँखें खुलीं, और उन्होंने देखा कि वे दो भूत उनके सिर पर बैठे हुए हैं। वे झट उनके पैरों पर गिर पड़े और काँपते–काँपते बोले, "तुमसे प्रार्थना करता हूँ! मुझे मत खाना। मैं दो सौ भैंसे बलि चढ़ाकर तुम्हारी पूजा करूँगा।"

गोपी बोला," महाराज, आपके डरने की कोई बात नहीं है। हम भी भूत नहीं हैं, आपको खाने की भी कोई मंशा हमारी नहीं है।" राजाजी को इससे ज़रा भी भरोसा नहीं हुआ। वे और कुछ न कहकर सिर छिपाकर काँपने लगे।

इधर बाघा ने आकर हाल्ला के राजा से कहा, "कल रात हमलोग शुंडी के राजा को पकड़ लाए हैं। अब आपका क्या आदेश है? " हाल्ला के राज बोले, "उन्हें ले आओ!"

जब दोनों राजाओं की मुलाक़ात हुई तो शुंडी के राजा को पता चला कि उनको पकड़ कर लाया गया है। हाल्ला को जीतना तो उनकी किस्मत में रहा ही नहीं, अब जान पर भी बन आई है। पर हाल्ला के राजा ने उनको जान से नहीं मारा, सिर्फ उनका राज्य छीन लिया। इसके बाद गोपी और बाघा से बोले, "तुम्हीं लोगों ने मुझे बचाया है, नहीं तो मेरा राज्य भी जाता और जान भी जाती। मैं तुम्हारा क्या भला कर सकता हूँ? शुंडी–राज्य का आधा तुम्हें दे रहा हूँ और अपनी दो बेटियों की शादी तुम्हारे साथ करना चाहता हूँ।

फिर खूब धूम मची। गोपी और बाघा हाल्ला के राजा के दामाद होकर और शुंडी का आधा राज्य पाकर परम आनंद के साथ संगीत–चर्चा करते रहे। तब गोपी के माँ–बाप जैसा सुख और किसे मिल सकता था?

+ + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + + +